

246.
Bhagavata
Uddhava
samvāda

શ્રીમદ્ ભગવત ગીતા	
2750	I

ASNA ARCHIVES

अथ यं दिवं वा तं ॥ सो यं अहं ब्रह्मा ॥ इति वाक्यार्थः ॥ अथ केन ॥ उत्त-
रिष्यते ननु कथा काले श्रीने ननु कथा सदा सा न भया का ॥ विद-
यते जस्वरूप भया का ॥ रसा प्ररु स क न अहं तु मामि ॥ १ ॥ मे-
रु स क ह व स भं न्या प्ररु स ले ॥ रसा न र ह ले विचार गर्तु ॥ अ-
हं म वा धी हो र स्यां तु भ निज स्त्री जानला ॥ को ना परि कार ले म क-
हा ला भ निः ज स्त्री विचार गर लाः हे ना रा य राः सा स्त्र को ज्ञा न कोः
संसार कोः आ प्रा व स कोः कहि ले उत्पति भयोः लोक हि ले सम

राम०

॥ १ ॥

रह न्या धन को अंतर रहे न धन भनिः नमस्ते ध्यान गरिविचार गला
हे नारायण सत्तु सुसत्तु सास्य सत्तु संगले तेरा अनुग्रह ले मिल
न्या रहे धन पार उन्नत्या को रस्ता रहे न धन ॥ ३ ॥ कौने कार भन्यो दे
वि. माहा उलो धा हा न मिल न्या. रसो संसार सागर पार उन्नमना
को गमे न भया को रहे धन को हितेरा अनुग्रह ले दृढ कि ना उ जति
को वहना सत्तु को मला हा गरिला भुन्या पार उन्नत्या रहे धन ॥ ४ ॥
हे नारायण तो संसार भन्या दिव तुलो अ संख्य काल को रोग रहे
धन ॥ सास्त्र वेद प्रमाण उपदे को वष विनला गन्याः को हि सुविचा

रिउरसमात्रै त्रिष विरह्या चन्. कोहं मको संसार को हो भनि सु सा
विचारै ले र विवेक ले मात्रै लय कु दार ह्या चन्. अ की उपाई ले मि
सो भना को बां हो रहे न छ ॥ ५ ॥ हे नारायण को न कण कारण भ
न्या. जस देस मा तेरा अतु ग्रह भयनः सज्जन पुरु स भये न भ
न्या तस देस मा हा सत कुल सल सित दया उजा लो मार्ग कु न्यार
हे न छ. सदा अंध कार अघोर तप ता उ न्यार हे छ. रस्ता मा प्राणि
षे ल द चन् ॥ ६ ॥ हे नारायण सज्जन पुरु स भन्या का रस्ता कु दार
ह्या चन्. सदा संती पर ह न्याः दुःख को भेद न जान्याः तेरा कथा गुण

राम०
२

विचारम्माः कति शय को भद जा न्याः सां वो देवि रहित भया का ॥ ७ ॥
आ फु अ न्ये भया काः सदा धर्मा आ न न्द रह न्याः ए स्मा त र ह लो आ न न्द
गु र्द र ह्यो द न् ॥ ८ ॥ हे ना रा य रा ता नि ज न् को ति र ए स्तो हु न्या र हे द्यः
क व न्ये आ मा दे विः सु ख को उ द यु ग न्या वे त न्य रु प मा हा ल्य य ले
३ ॥ अ वि ना सिः स वि दान न्द आ न न्द ग र्द र ह्यो द न् स ज न का सु ख
को पा र र हे न द्यः सं सार को अ न्ये स ज न ॥ ९ ॥ द द न् स ज न का सु ख का
अ न्य को जा द न् स त्व र ज त म त्रि गु ण आ दी ग न्या को सं सार हे द्यः
ते रा भ क्त ग र्द भ नि भ न्या उ रु स प निः गु ण भि त्र र ह दा दे ष्या ती न्द

एगोरखा छन तेरा करताः कोमकर्म कोना सहुंदा तम कोना सहुं
हो रहे छे द्रव्य कोर मान कोना सहुं दारजगुण कोना सहुं दोर
हे छे आसा कोर तन कोना सहुंदा सतगुण कोना सहुं दोर हे
छे तिषाणि जो छन कस्का सरण माहा जा छे जस्का अधार
मारखा काधिया तेसे कोना सहुंदा फेरि ससे गुण को चर
वना उछन तेसे अर्थ वारं वार कति थियुं छे ॥२॥ दारण पाउ
हैन हे नारायण सत्य ज्ञान सत रास तत्य विज्ञान वल ज्ञा
न तेसे लाई अखण्ड ज्ञान भन कोहि सत सिधो सत साधु लेमा

राम०

३

त्रैपाउन्माः रत्ना छनः कोहि तेरा अनुग्रह लेः आ कै आ फ व ल सा
न पा प्र भ या म त्रै ॥१०॥ उ प दे स का क म लेः अ व स्था स म मा त्रै भो
ग ग न को र मा न को मा त्रै रु न्मा र ह छः को हि के व ले सि ध्य ले मा
त्रैः ते रा ग तः पा उ दा र त्वा छं ॥११॥ को हि ते रा अनुग्रह ले ताः वि ना
स्त्रैः वि ना उ रू प र म श्व र ला ई दे ष दा र त्वा छनः आ क्रा म त्र ले आ
त्मा मि त्रः आत्मा बु डि का विं व म हा खे ल दा आ नं द ग द र त्वा छन
॥१२॥ स वै पा णि जो छ न्दः ता न को आ दि अं त्र न पा ई क न क हि ले को
नः क हि ले को न ग रि अ भ्या स चि त स दा स र्व दा ना स रु दा र ह छः

रसज्ञानको थोरे भेद पाया वनि ज्ञान का धर्म ले: संसार: रुके ना
स देवता: गुण धर्म दोउ न दा को रहे न छे ॥ १३ ॥ आक्रा कंठ मा वस्तु
ये नर पाई कन भ्रम नाग दार ह्या छे न: भ्रम राग दुर्ग: सत गुरु मि
स्या मा त्रै पाहि न्या रहे छे: आक्रु ख रूप क से ले जा न्दो रहे न छे आ
गिलाई देव ले व मि त ग न्या को रहे छे: देव भन्या को क्या हो भन्या
नारि पुरु स हो: क से ले नारि आदि भू न: क से ले पुरु स आदि भ
छे न: जाडु विधा ता छे न: सो देव हो: ते से अर्थ विषये का सुख मा
हो भन्या का छे न: यदि विष को विष भै ना स रुं छे ॥ १४ ॥ अतं त गुडि

राम०
॥ ४ ॥

भयः भावनामाः वाचिदिकनः पदार्थकोडिडुर्मतिलिदोरहेद्यः
संकल्पगरेरः थोरैडुः स्वकोनाशकुंछः असंकल्पभयादेविअभय
सुखकुंछ ॥ १५ ॥ जसोसपनामालः सयवर्षकोतदेविहिंदुजाग्या
पदिशरणमालानासकुंछ तसोगरिमायामोहोमहोविलास
गन्याको १ तनछुद्यापदिनासकुंछ जानिजनकोस्वयआत्मा
पदिनासकुंछ १ तेसैअथलेजानिजनलेसंसारत्यक्तगर्द
वन ॥ १६ ॥ एगदोषिदिथादेखिः संगतदेवि रहितभयआका
बुद्धिमलमात्रैहेर्दछनतिनिपूरुसमात्रैजियाकोधन्यछ ॥ १७

जौ ना घरु स लेरु कै आत्मा मत्र देव त छ विन्न त्वय गर्त सक्त छ.
 बाहिर आं बाभिन्न जौ दछ. तेस्को जिया को मात्र धन्ये छ ॥ १० ॥ हृद
 य को जौ अकास छ. तेस्को ना राहु दैन विचारि देवो आ फे आ फ
 चंगा ॥ स भे म हा मिला को भिन्न न भया को रे कै तत्व भया को ते
 स्तो नि भय आत्मा न जानि; तत का अधार म हा भू लेरु. प्राणि ज
 न ले वेथे सोचना गर्दछन् नृष आत्मा कहिले य नि आ फु दैन.
 जौ आ फु स्व आत्मा कै ले ना राहु दैनः ॥ कवि जन का भ्रमण ले आ
 फु आत्मा न जानि व्यर्थे सोचना गर्दछन् ॥ १२ ॥ जसो दूर रा बडा मास

ये काकि रणि आकास जां छन. षडाका नास रुदाकि रणि का आकास
को नास रुदं दैन त सौ त न को नास रुदा आत्मा को नास रुदं दैन: ते हि आ
त्मा मा लय य मा सदा आनंद रहे छु ॥ २० ॥ न ज न न्द न म ई छ. न म
यो यो न म न्पा छ. न म ला. न ज न्मा थो ॥ न ज नि रहे छ. न ज न
ला. ज ग त. के व ल्प आ फे आ पू व ल है ॥ २१ ॥ वि स्ना र क रुं तो आ का
स न्पा फे हो सू क्ष्म क रुं तो पर मा त्मा आ दि आ फे हो. सू द्र. सू क्ष्म.
व्य य. शि व. जो न आत्मा देखि ॥ अ को रा म को न हो ॥ २२ ॥ अ थ वा ज
न्मा य नि. आ फे म या य नि आ फे आ पे म आ पे ल य भे शां त भ या

य निष्पाये ॥ २३ ॥ सर्वे एकं शिवं शांतं आदि अंत्य मध्य वर्जितं भा
 वर ॥ अभाव देवि मुक्त मया को ॥ ए सो आ फु व ल छ ॥ ए सो म ति ग
 ति ग रि जो ल प हुं छ ॥ सो ए दा आ नं द र हुं छ ॥ २४ ॥ ए सो द्रो डिका मा
 र्थ लो भा र्थ ॥ अ हुं का रा र्थ ॥ का मा र्थ भि भा र्थ ॥ इ ति का मा र्थ रा म भं छ
 न् ॥ रा मा र्थ रा म भं त्र को जां द छ ॥ ला व मा र्थ क हुं छ ॥ मूर्ख भं छ ॥
 का मा र्थ रा म य नि भं छ न् ॥ निंदा र्थ ॥ नि व ज न वो ल द छ न् ॥ वां
 उ ल ले वो ला ल ले ॥ मूर्ख ले प नि आ फु जि व जां द छ ॥ आ फ्रा जी व
 दो खि व ठ ता को जां द छ न् ॥ को छ न वा धी न विष ॥ नृप न् ॥ त संप न् ॥
 अ

राम०
 ६

न का प्रा न मा या. न संज न. न मूर्ख. एति को नै कु रो प नि स त्रै हो
ई न. मूर्ख भ न्या को हु न् भ न्या दे वि. सत्य कर्म लिं दाः सरि रत्ना ई
उः ख हो ला भ नि उ रा उ न्या. म न्ना को आ ट ग न्या. ना रा य रा का म
तै म हा. सत्य धा उ न्या ति प्रा णि मूर्ख हु ॥ २५ ॥ इति रा ग्य यो प्र थ म उ
कर न म् ॥ ॥ ॐ सं सा र मा भु म न ग न्याः यो स न् जो ध. सां त हु न्या
उ पा ई भ न् दु. हे म न तै को हां जा छ सः श्री र को सा ग र मा हां का रो ज न्
ज सौ जां हां. जा उ. तं फ छ न् ॥ १ ॥ हे म न यो सं सा र भ न्या को क लो ध
भ न्या दे वि. ज सौ चि त्र दे वि नि मि र्ध उ न्य ति हुं छ रु रा उं छ. त सौ यो सं सा

र. प्रलय उत्पत्ति हुंछ. यो संसार को वासना छोड़ि कन. जसै का बांधी
रभी रहंछ. तसै गरि सांत भौर रहनु ॥ २ ॥ यो संसार जो छ कल्पना हो. यो
कल्पना क्षये होई जांछ. कल्पना को क्षय हुंद. संसार भस्म होई जां
छ हेन. आह मा संसय छैन ॥ ३ ॥ तसै गरि सर्व को. मति छु य्या स
सर्व को नास हुंछ. काठ महा को अग्नि न जागै. कारणंछ. जाग्या प
छि. भस्म हुंछ. तसै गरि स्व आत्मा जाग्या पछि यो संसार भस्म हुं
छ. हे मन. तैले पति ये तेर. तेसै आत्मा माहालय होई जा. यो मि
थ्या संसार को आसा के नगदंछ ॥ ४ ॥ जो धरु सधन. आक्रामन

का कल्प ना ले ३: स्व को घ ख ना उ छ. ये संसार चिर काल को वे ता
ला हो. भ नि चे त रा ष तै न. को हि वि वे क ले प्र ल य हु छ. ५ ज से व
न स्प ति म हा वृ क्ष ले आ फु का ल हो उ दै न: त से म नु ष ले प नि जों
जों अ व स्था का तों तों क र्म ग द छ. सो भा व मे र न जा दै न. हे म न. वृ क्ष
को र प्रा णि को र क ति फे र दे ष त छ स॥ ६॥ अ हो आ अ र्थे रहे छ आ फा
अ व स्था मा आ फे मो हि त भे र. बां धी रहं दो रहे छ. आ को बां ध ना. को
हि रहं न छ सर्वा ग व्या प्या को आत्मा दे ष तो रहे न छ॥ ७॥ जो ना ध रू स ले
यो ना रा य ण को आत्मा दे प्रो रहे छ. सो ना सि जं दो रहे छ. ज से स मु छ का

कि१

मध्ये मा ग य र वा नि भ या प हि . क स्ता ई दो शो पा नि भ न्तु . सूर्ये का कि
 र णि म हा मि त्या प हि क स्ता ई दो शो म भ न्तु . वा यु मा हा वा यु मि त्या प
 हि पे हि . क स्ता ई दो शो वा यु भ न्तु . त सै ई श्व र मा हा मि त्या प हि क स्ता ई
 ई श्व र भ न्तु . ना सि कि भ न्या को आ ये आ प हो ॥ ८ ॥ आ प्रा आ त्मा को क
 य ना ग रि आ ये आ प जो जां द छ आ फू दे वि आ फै हो सा अ वि ना सि हो
 र ज सै ग रि र क मंत्र को टि को टि ला ई दि त्तर आ फू छे उ . उ त्ति र हं छ
 लि न्या . ही न्या छे उ . उ त्ति र हं छ . त सै उ कार ले . अ ल ष द रि या . उ भे
 र ग्यो आ ये आ प भू ली ग यो ॥ ९ ॥ ज सै ग रि द र्प न्म हां न्या वि ज दे वा उ

देव नः आकृग तदो डि उस्ते देवा ईदिं छु जसै जल मा हां चूं वा उद न
छर आ गो छ भ नि को हि देष तै नः तसै गरि आ क्रा उ डि का विं व मा हां
न्या देषा को न्या स न्या को स द रूप मि लि जां छु त व आ फु ह रा इ जां छु
नि नै गु रा मा त्रै देष त छु ॥ ११ ॥ ज सै सूर्य न उ दा उ दे अ न्ये क नारा देषि
हिं छु उ दा या प छि आ फे ते ज ले ठा क छु त सै आ क्रा उ डि उ दा या
प छि स भै ह रा उ छु आ फे जां द छ न र सौ छो डि स व भ्र म न ग रा जां
हिं ग द छ न स र्प ले रो आ ह रा वा शु हो था ते मा हां आ उ छ म के न भ्र
म भ दे न त सै म भु ख ले ग ति न जा नि भ्र म रा ग द छ न ॥ १२ ॥ यो सं सा

रभन्याको भोग भाव ले वाधी ही रहंछु. काम का डाढाले जर्दो रहंछु ॥ १३ ॥
 जले गरिसुन्द महां जला का तरंग उठत छुन. तसे मन का तरंग उठत
 छु. तेसे तरंग लाई धिरग नर् ॥ १४ ॥ आकु आत्मा विहिकन. सो संव लहं.
 इति सकल गुरु. अन्य संकल्प मिथ्या. तव इन्द्रिका जाल देवि जागेर.
 आक्रा आत्मा महा लये भै आनंद हुंछु ॥ १५ ॥ जसे वाल पले आकु वोर
 ल. वातु न वातु. जां देन. तसे संसार को मूढा मति भयर आत्मा जां दे
 न ॥ १६ ॥ सून को विक्रि हि गदां गदे दुरु सम रिजांछु. गहना पहें दां पहें
 दें. कान दुटि जांछु. तिणारि जन ले गहना पहें नछा डू देन. फेरि प

राम.
 र

निघोरालाईः सुनका विक्रिगर्न पठाउँछन्. तसै पुरुषले ईद्रिका पर्व
ताता घनसकैत. आवाले अर्को परमाथ देवतेन ॥ १७ ॥ अज्ञानकोडुः
खको घर बनायेर. ज्ञान सहि हो भनर. यो संसार. आनन्द भयी रहन्छ
जसै अंधकार घरम हाँदियो नवाल्दै. कसै बिज भयापति देखेन.
तसै यो घटम हाँकति बिज भयापति अज्ञानका अंधकाल देखेन ॥ १८ ॥
यो आत्मा जो छ. अकाराजस्रोत निर्मल छ. तव जा हा माया छ. ता हाँमा
विलाई रहे छ. संसारले. हाँः आत्मा. हाँ. राम. हाँकाल भनि. जा कह
तिला गया का आवाले देखेन ॥ १९ ॥ जसै सूर्य उदाउँछन्. नवै खण्ड
रतिका घाणि जो छन्. तिनका आवाकी रणी महा मिल नजाँछ. सकैत

त्वं सूर्यः मामिलन जांछे तव यागिल मे रै आये सूर्ये छे नन्द जे
 हा सूर्य जांछे ता हां किरणी जान्छे अंधकार मा हा के रियागि पछे
 तत्व भिन्न ऊंछे अ को वर्ण नगर्दछे ॥ २० ॥ जसै गरिघट घट आ
 त्मा त्मा पस्या को छे र दो आ घट मा हां मिल दछे जां हा तो आ फे आ
 त्मा जांछे ता हा किरणि जांछे जां हां तत्व मिला को छे ता हां वो लि
 मिल दछे जां हां मिले न ता हा मिल दे न तव किरणि विचार
 नः ना लागु जस्का किरणिले तसै लाई गाई गाई वहुं दे न रे
 के तत्व भया के रि अंधकार म हां पछे ॥ २१ ॥ सास्त्र विचारण ला

ग्या सास्त्र कथन लाग्याः कहिले लये ऊं न. आत्मा अविनासि च
तेस्का किरणी उदा उदा रहं च सास्त्र द्योति. कथना द्योतिः तत्त्व
मा. मान विचारत. तत्त्व देवि संसार ऊं च. तत्त्व देवि लोखि वेद
द्वारा सकल सास्त्र ऊं च २२ यो संसार जो च. निमेषादि प
लाघरि दिन मास वर्ष जू. गाम नूः कल्पः अराक्षणः उत्पति
पलये ऊं च. आत्मा अविनासि च ॥ २३ ॥ तसौ पांनि देवि किन ऊं
उदा ऊं च. पुनः पांनि माहालय ऊं च. तसौ गरि. आत्मा दे
वि विश्वात्मा ऊं च ॥ २४ ॥ फेरि आत्मा माहा विश्व आत्मा लय ऊं

ध॥ २५॥ जसै माटा का कुंभ माहां. सुन का कुंभ महा. याति रहंछ.
उई ठाउँ को जो रनुर र कै ऊँछ. वज्र बालि रहंछ. तसै आत्मा म
र्त्तः मित्पा पछि. तिउ त्रै बडा कस्का भंनुः आत्मा ज्ञान विना भंति
छुट दैन आत्मा न भासित हुंदैन ॥ २६॥ रज ज्ञान ले जो गि जो ग
जो दैनः वारं वार आउँ न जान हुँछ ॥ २७॥ जसु ई आत्मा बोध हुं
छ. यो स्थिति जो छ. आश्चर्य देखत छ. कसो आश्चर्य. जगत्.
इवरा त राम. जगत्. उक्त त भया को सर्व ॥ २८॥ राम समाया रा
म पाउँछ. सर्प समाया विष पाउँछ. आत्मा ज्ञान विना विषय को

राम ०

११

रश्मि मृतको विवेक पाहिना ॥ २९ ॥ जसौ सुते र. आ फुरु पजा गदध. तसै
मृत्यु भयरः यो तन जा गदध ॥ ३० ॥ आवै रूप आ ई जम्यो आवै रूप जा
मयो आ उख य दै दै. जम्यो भने रमाया ले देखत दै. मयो मने
र. माया मने दै ॥ ३१ ॥ एष घूरु रको नना सभ यो नाना सहु न्या
द. माया महा सुते र. माया ले उत य त्रिपल यको भुमना गदध. आ
फुता सुती रह दै. ऐति वेत पा उ दै न. सका हां सुतिर ह्या दु. नमै
रा आधार को ई थियो. नम को ई का आधार थि जा मेरी स्वप्ना मा हां
मभूला भनि आवै पूरु सजा गिः आवै आय हों ॥ ३२ ॥ इति जो

जगन्निधानासद्वितियं प्रकरणम् ॥ २ ॥ जियको मुक्ताकहं०
जसै तुरा महाअतिहालिदिनुर० कति तुरा भयापति भस्महुंछ
तसै तत्वात्मबोध भयापदि सर्वनास भस्महुंछ ॥ १ ॥ उक्त सद्का
समाधिले तत्वात्मदेखिहंछ० मौनिभेदकाल समाधिले तत्वा
त्ममहासादलेयेहुंछ० तव स्थितिमाईछ ॥ २ ॥ तव संसारचित्त
रूपरक अकार देखिंछ० सकै तत्पगरिनां तभै जोजोगिवसछ०
सो बलक वाचिस्तखिहो ॥ ३ ॥ जसै शरदकारको घुर्गचंद्रमाकला
ले उक्त भन्याकोहुंछ तसै गरिनां तभै कन० जोजोगिरहंछ० शोप

परमेश्वर हो ॥ ४ ॥ ब्रह्मादिदेवता वेदादिशास्त्रसर्वे ते तत्र विचार्य
दुष्कृतं चलनभयाकासदासंतुष्टभयाको-संसारदेविशुद्धे तत्र
भैकनसांत आत्मा महालयं जोजोगिरुहं ॥ ५ ॥ ब्रह्म हं ब्रह्मोपादि
हं जसौ शरण्य पर्वत महा मृग रंघं पंथिरुहं ॥ तसौ गरिवस्त
ब्रह्म महालय भैरव शयनरुहं ॥ संत आयापनि मूर्ख आया
पनितिका अस्तु नितिकानिंदास्तु नलाग्या वहि माहा जांघ-आफ्रा
आफ्रा आत्मा महालय भैरव निरुहं ॥ अन्य उपयोग न दे न ॥ ७ ॥
मित्रासित वोलनं क्वा अर्थ ले भन्या देवि जसौ सर्व ले देवरः संरि

रं मो हो को. अर्को प्राणि देखे र मसित विषय छ कागर्ला भनि हुटले
 आर्षे ना सहुंछ ॥८॥ तसै मत्ता मम हां प्रविशु. सकवा तवो लेरका
 होला भन्या ता यो संरि र मो हो को भा जो छ मो ह पस्छ र ना सहुंछ र
 जसै फटिक को खं वनि मंछ र जो नै रंग देवा ई दिनु र तसै रंग हो ई
 जां छ ॥९॥ तसै यो आत्मा पनि निमल छ र. तव जो नै कर्म देखो सु ई
 तौ नै कर्म माला ग्छ तव लय न रा गे नै रा रहनु ॥१०॥ जसै रवि उदा
 उदं र. दिन रा त्रि जां हिं र हुंछ न. उदाया का त्रिक्या दिन भं न्द्र ॥११॥
 तसै वा हिर च ति दो डि अंतर स्तस्व भै रहन्. तां हां दिन रा त्रि कि छुंछ

राम०
 १३

न. आकुचित्र उदा उदर. प्रकाल कला चित्र. ते सौ अर्थ ले जो
गिर के तल भै सांतर रुंद. दोई देवा जो हा देष. वहि चित्र उदा उ
न जां घ. आकु गति हर उई जां घ. त से अर्थ ले जो गि जन ले अकर्मि
भै कन आत्मा मा लय रुंद सो प्राज सो संसार देष तदा ॥ १३ ॥ त से हे
म का गह ना गा ल न र फेरि कर्म ले न व उई जुग २ इ से रुंद. त
से यो म नूष्य का. त न घु घा प दि के रि निल देन. तो वे न रूप आ
फू भ ग व न. कल्या त सम सति रुंद वा ज न्यो. वा म या य स्र जो
नि कल्या को स य भ या प दि आ पे आ प जा ग ला आ फे क न ले कर्म

भयूर. जस्ता को तस्ति. गरिक ल्य रवि सार होला आ फू आ का रा आ मा
आ फे देव्यो भन्या विगत सित त न दु व्या प नि मो पू रु स सु क हो ला
॥१५॥ वा ज न्मो मू कै छ. किं चित् रं त न भया देवि. किं चित् को हि
छ भनि आ फू अ न्ता न पा या मा त्रे ॥१६॥ गा ई का पा हि ला जों हि य छि
छ मथ्ये का किं चित् जों हिं. स मे रु प व र त छ था न र आ का रा म छि
भि त्र उ ति पा रि हं छ. अं तु ला का अं त र ज ति र हं छ त से छ. द स ओ
ता र वि भू व न त र रा स रि र हं. त र रा प नि आ ता रै हो. क्वा उ व मा क्वा
ऊं दे न नि रा म य नि रा ल व नि रा अ य प नि रा धार आ फे आ प ७

आदिभूतं च तं भूतं मध्यं भूतं दृष्टं भूतं सुखं गतिं यत्तैः ॥ १८ ॥
दृष्टं आदिभूतं मध्यं भूतं च तं भूतं दृष्टं भूतं ज्ञेयं च तं माया नि
दृष्टं ॥ १९ ॥ ऐसो गतिं चाभूतं कारुण्यं कामध्यां तरमाणा आ
फैः आप-आपे भरिहिंदरुणं ऊं हं आफैः नेग ऊं हं रसुने देवत
हं ॥ २० ॥ तत्रैरसोयं भनि वाक्यार्थमात्रप्रकाश ऊं हं आफैः वस्तु
आफैः जयभैः आफैः देवो सोयं मूक्तो ॥ २१ ॥ वारानिर्वारं सुकेचि
तकादया जसो सो मूक्तो अहंकारादिमाया यत्तं गरिसंसारको
वास्तनाये तं गरिजो जोगि धेररहं हं रजोग विजोग उवै जोगि वि

नमोस्तुते त्वत्पदोत्तमं जितुं देवैः सुकृतं यापेयाप ॥ २३ ॥ जसौ आक्राकुलदेवि
 उरभयापदि अमृतं देवि सुकृतं देवि ॥ जसौ त्वत्पदोत्तमं जितुं देवि जितुं देवि
 जितुं देवि त्वत्पदोत्तमं जितुं देवि ॥ २४ ॥ जसौ शैलदेवि भोगदेवि मित्रदेवि
 शत्रुदेवि ॥ मृतदेवि जन्मदेवि कायादेवि नेत्राभौ आनंदरहे ॥ २५ ॥
 हृदयलाई त्वत्पदोत्तमं जितुं देवि सुकृतं यापेयाप ॥ २६ ॥ जसौ आक्राकुलदेवि
 उरभयापदि अमृतं देवि सुकृतं देवि ॥ जसौ त्वत्पदोत्तमं जितुं देवि जितुं देवि
 जितुं देवि त्वत्पदोत्तमं जितुं देवि ॥ २७ ॥ जसौ शैलदेवि भोगदेवि मित्रदेवि
 शत्रुदेवि ॥ मृतदेवि जन्मदेवि कायादेवि नेत्राभौ आनंदरहे ॥ २८ ॥
 हृदयलाई त्वत्पदोत्तमं जितुं देवि सुकृतं यापेयाप ॥ २९ ॥ जसौ आक्राकुलदेवि
 उरभयापदि अमृतं देवि सुकृतं देवि ॥ जसौ त्वत्पदोत्तमं जितुं देवि जितुं देवि
 जितुं देवि त्वत्पदोत्तमं जितुं देवि ॥ ३० ॥ जसौ शैलदेवि भोगदेवि मित्रदेवि
 शत्रुदेवि ॥ मृतदेवि जन्मदेवि कायादेवि नेत्राभौ आनंदरहे ॥ ३१ ॥

ॐ आसद्यो डिजो जो गि स मा ध तो र्त्त र क मा स मा हा म थ वा दि न
॥१६॥ म हा म क हो ला ॥२७॥ अ न्ये क र्म ना सि आ फ्रा आ त्मा म हां आ
त्मा ला ई जी ना धि र ज ले वं ध म र्त्त र क वा ना दि मो क्ष हो किं चि त्
अ र्को ना सि दे खे न आ फ्रा म त्र मा त्रै दे ष्ठ त व म न म ने आ जै
आ जै छ ज व धि र मै सां न सा ग रा ऊं छ त प ते सै आ नं द सा गर
मा हां को हि आ फै आ फ वै त न्य रू प रू प उ त्प न्न ऊं छ सु न्या को जा
गृ ह्मो आ न न्द सा प ह प र म आ नं द मा हा ल ये हो ई जां छ ॥२८॥
त व नि र्द ति न मो क्ष न आ स न अं त रि क्ष न पा ता ल न पि थि

को ते करो धेन. मिथा छ. का छ त व भ न्या दे वि रे कै आ स न मा त्र
ध. ज्य हां जा हा ज उं त उं व भं छ सो ते सै आ सा ले भं छ. आ को दो
ओ छ भ न्या को छ. जो जो गि आ सा को भ ये गू र्द. सो मो भ को मो
भ भ ये र हं छ. आ सा छ स वै छ. आ सा ग मो भ भ ये ॥ २२ ॥ आ
दि न अं त वि त्र व न आ न न्द. क ल्प ना दे वि ने रा र कं र क र
पं दि भा व ले धि ति भ या को छ. को वां धि हि न्द. क स्को मू त हं
छ ॥ ३० ॥ त सै का र रा ले आ कै आ फू जा ति म त ला ई वा ध न्द. म
नै ला ई उ स न रा व उ. रा म जो छ. सो आ वै हो म नै ला ई व स्प ग

यो भ न्या सो जो गि मो क्ष भ यो जो ग भ यो त सै ला ई जि ति भ योः
जो हो ला ते सै ला ई जि ति हो ला ॥ ३१ ॥ इ ति जि व भु क्ति नृ ति पे उ
क र ए ॥ ३ ॥ मन को सो भा व मे टि ला य हु न्या उ पा ई भं धूः र
स न को सो भा व जो धूः मन दे वि प र अ को को धूः भ ति स रु
स्त्र को टि ॥ ३ ॥ क ल्प ना लि पे र वा द धूः जो ये त न्म रू प सो स र्ग
अ म ल र सो भ ये र आ फू ड ख पा उं धूः पि ए उ को ना स हुं धूः
॥ १ ॥ ज सै स भु न्द्र का ल हरि उं दू त धूः ज सै पा नि का ग ति उं धूः
व हि रं हूः त सै ना रि ष रु स हि भा व भ य र क ल्प ना सि क्ति

मात्र भंये र व हं छ ॥ २ ॥ तस्मात्कारण त त सै कारण ले ज्ञा वं त
 देवता गण गंधर्व अने कजि व भै क न छ २ माहा आ कै आ
 प भये र क लप ना ग दं छ ॥ ३ ॥ ज सौ व न स्य ति मा हा डा हा ला ग
 छ र वा ७ व हे र सा म्या ऊं दै न . अ धि क य व ल ऊं छ . त सै सं क
 ल्प ग रे र . सि धि का वृ त्ति ऊं छ . और मा या वि स्ता र ऊं न जां छ .
 सं क ल्प सा म्या ऊं दै न ॥ ४ ॥ त सौ स्व क्रा मा हा . म र्द र . जा ग्या प धि
 म म रि न छु क्पा स्व प्रा दे र्वां रु सो भं छ . त सै यो म न को स्व प्रा हो
 म ने दे वि उं का रा दि स क ल भू व न उ द य भ यो जा ग्या प धि को

राम ०
 १७

हि आ कै आ फ ॥ ५ ॥ त व आ त्मा महा आ त्मा को आ कै ले द स न ग न ॥ ६ ॥
त न ला ई सो व स हो ई न भ नू त व यो त न भ नू हो . आ ये म न रा म
हो ॥ ७ ॥ अ सं स स त म हा सो हं म र ह्यां दु . यो तं न मे रो र हे त व भ नि
रु ति सं त्र ले म न मै नै वि वा र ग न ॥ ८ ॥ भा व ना द्यो डि वि वे क ले
मा नै ल य ह नू ॥ ९ ॥ स से पा ई ले नि का म भ ग्न र स को त भै क
न म नै ला ई वं ध न ग नू आ ये रा द्य व हो आ ये रा म हो ॥ १० ॥ म
नै ले सं सार र यो . यो म नै क त्रा भ ये र . खे ल द द . म नै आ ये
उ र स हो म न आ ये ना रि हो म नै ले लो क अ लो क र न्यो म नै न

रा म नै डर. म नै मो क्ष. म नै वं ध यो स रि र ले सो न ग न्या द. ॥ ११ ॥ को
 हि आ कृ ष रा क्त म जा हि र ग न्या नि मि त्त ज ति सं ति सं तो वि द ता भी
 का आ फे सं सार भै क न वि स्तार भै र हे द. म नै को सि ए रुं दा त न
 को सि ए रुं द. जो जा न्या ले ते से ला ई ज त्त ग रि आ कृ ग ति म हं था
 ये ल ये रुं न. ॥ १२ ॥ अ को रा म द भ न्या दे वि दै का रा को वा स ना ले. वं
 धि हिं द. अ को को हि दै न. भ न्या दे वि दो आ अ क्ष र ला गे न. त व
 म न नि र्म ल रुं द र. आ फे आ फ मो क्ष रुं द. ॥ १३ ॥ वि वे क क रुं ज से
 व नु मा ले अ मृत क ला लि ये र क्षी रा द र्श भ श र भ मं द. त से म.

राम०
 १८

ऊरिले मरु ल्या उँछर. ते सै मरु का मो हो ले. मऊरि को ना सऊँछ. त
सै गरि मनु व्या ले आक्रा सभा व ले: यो त मो हो को भा डो तु ल्या ये र
विषय ले भरि कन. ना सऊँछ ॥१४॥ आक्रा सुख का नि रंतर मरु
विज भये र. ते साई को डि दि या मा हा य त ग हो मि हि दा जा हि. संसा
र हो मि हि ~~द~~ ~~वि~~ ~~सं~~ ~~सा~~ ~~र~~ ~~हो~~ ~~मि~~ ~~हि~~ ~~द~~ ~~े~~ ~~हो~~ ~~मि~~ ~~हि~~ ~~द~~ ~~े~~ ~~ग~~ ~~र्~~ ~~ह~~. को हि चिं ता रा म छ भ
ने र. ज सै स ति ग ये र वा का य दार्थ पा उँछ. घु मि व हि आ उँछ.
काल म न्या प नि आ उँछ. मि था भु मं छ ॥१५॥ आक्रा वा उ वा घट मा
हा आक्रा घट मा ज स ला ई रा म भं छ. मि त्र छैन. रु के रु प छ. न्हा

आये भ न्या का गु मा ये आ हा गु मा ये भ न्या का स मा ये र स आत्मा
 देवि का हा को ध. ध भ न्या को हो आ फा क ल्य ना ले जा हा स य हुं ध.
 ना हा आ के हो आत्मा देवि पर स य कारि को ध ॥ १६ ॥ त व किं चित आ
 को ध भ न्या को हो. क ल्य ना न रा षो र स्थिर भै क न. सक ल त्या क्त ग
 रे र. चित आत्मा र के र क भै रह न् ॥ १७ ॥ ज से धे र दिन जा गे र ति
 म ठो हुं ध र. स त्र ध. आ हा सं सार को ष व र पा उ दै न वा हा सो प्रा
 मा दे ष दे न. त से ग रि सां त भै य र त्रि गु ण दे वि रहित य. वा हिर
 सं सार भू ले र. भिन्न क ल्य ना मे टे र त व मन को र य हुं ध ॥ १८ ॥ ज

सौ गरिहिला माहायानिमिल्य तसौ गरिपानिमाधूलोमिल्य तसौ
गरिआत्मा महा मनमिला वनु जांछ मनकोर आत्मा कोरु कभ
भयो स्व आपै आपा ॥ १२ ॥ अनामिदुहस नना सरिर न परु सु
उनु से ने रा भया भन्या अथ वा वां धि य रा भन्या देविः चित्र भने
न संसार लेप निजां दछ आ फु लेप निजां दछ ते से चित्र लाई ॥
वाहु कसात रह ले भन्या देवि जसै वायु आउं दूर वृक्ष लाइ हवा
ई दिन्दु जाहों २ वायु लाइ ताहों २ आरयात रु छुंछ ॥ १३ ॥ तसै जाहों
२ चित्र जान्छ ताहों २ देहि चलन जांछ जाहा स्वल्प ताहों २ चित्र

गयो भनि जां नू २१ जलौ हात हातै मिल्यु. हात हातै ले पि हाग घ. हात
 ले. हातै समाने च. तसौ हात मिल्यु हात ले हातै पि हाग घ. तसौ
 अंग दे वि अंग ज न्यु. अंग मा अंग जो रिं घ. अंग ले अंगै को पि
 हाग घ. जौ ना ले. तौ नै लाई वा ऊ ऊं घ. जौ हा वि त्र ग यो ना हांग
 यो भनि वि त्रै ले जां न्यु वि त्रै ले वि त्रै लाई वा ध नू त व म न ले म नै
 लाई वा ऊ त व आत्मा मा हा ल य ऊं घ ॥ २२ ॥ एक वि त्र लाई न स्य का
 वला हा हात ले उठा या प नि स मु ड हातै ले दाल मा या प नि को रि
 म हा म नि ले आत्मा घे डि धा न ग या प नि आ प्रा प द मा हा जां दे न

वर्ग मो शेषा समापक वा उं न्या देह या ये र अभा गि अर्थ धन विषयादि
क विषे अस क भै का धिये ला ॥ २३ ॥ जो देवता पितर बंधू अनिधिलाई भ
या मा फि क का व लु ले उ त्र ज न भ्रा क स नः भोजनः इत्यादि आदर दें न
न भ न्या सो लो मि भु ड अधोग ति मा जा छ न ॥ २४ ॥ इस वै अनर्थे ला भ ले
अ ध र्म मै ले गु न्याः आज व ल उ मै रा जो व न भ या माः सो भु क क र्म गु न्या
म य दि व क भै अस क द व ल अ व स्था मा का पुरुषार्थ ग रु ला व था ठ गि
जो छ ॥ २५ ॥ यर्थे धन दि आ सा ले वि कान् प नि वा धिया को दे वि न्द्र त स र्थ
को हि म ला पुरुष ई स र कि मा या लेः सर्व लोक मो हि त भू या को र हे छ ॥ २६ ॥
धन ले का ग र्भः धन दि न्या ले पो का ग र्भः काम ना ले पो का ग र्भ प रि ना म

ममाः मर्तुस्त्रिपि म हा से ग लेः या स भ या को ध न स किये न भ न्याः क र्मा
 दि ग रे पो का भ योः वा रं वा र जं म न मो ह ना या जाल वं ध न छु टे न भ न्या
 स व दृ था र ह छ ॥ २७ ॥ आ ज म ग रि व माः अ व स्ये भ ग वान्ः उ स न्न भ या
 छ न् ज स्का र ग लेः आ कु उ आ र ह न्याः वै रा ग्य म ला ई उ दा यो ॥ २८ ॥ अ व म
 ज स्ता न र ह लेः यो दे हा मि मा न छु ट ग छ न् उ स्ता रि ति ले त य स्या दि क लेः
 अ व म स भ ई वि वे क ध र्व क आ फे मा या आ फे अ नु ष्ठ भ ई स स दे ह को अ
 हं का र सु का उ छु ॥ २९ ॥ स व दे व ता ह र सा ध ज न ह र म वि षे क रु ना ग रु न् उ
 भ च र ण को स र रा मा प याः ज स्तो ख द्वा ग रा जाले स क मो हो त माः प र म धा
 म वि षे षा न्न भ याः त स्तो म ग रि व मा भ ग वान् द या ग रु न् ॥ ३० ॥ हे उ ष्ण व जि स

आतरले: मनले निम्न यगरिक नति वासरा सांत भैष्ठनिक नलि ईअरं कारक
नखोउदाभया ॥३१॥ सकलै संवर्गा ईदिये कन वैचिष्टि विवेकि दुः कोहि कदि
नमा भिशा माग्नि मित्रः गाउँ मसा जादा भया ॥३२॥ अथ सुवधुत भैष्ठया काति
वासर कनः गाउँ काति वासर कनः गाउँ का हर्जन हरुले: दैविक नतिरस्कार
गर्त लाग्पा ॥३३॥ कसे ले उँ उँ सिदिया: कसे ले क उलु बोसिलिया: कसे ले: भिशा:
माग्नि यात्र लिदिया: लिंछ सुकि. भनि: कति वेर दिह्यो: अनिके दिवो सँ छन
एसो वारं वार गर्दै: तिरस्कार गर्दा भया ॥३४॥ केहि अलि कति भिशा माग्नि को
नदिकाति रमागई कन: वान लाग्पा मा उहि पति गयेर: तिने हर्जन हरु: कसे
ले: सिरमा सुतिदिन लाग्पा: कोहि थुकि दिन लाग्पा: सेरु सितिले: पावि हरुले:

निरस्कार गार्हभया ॥ ३५ ॥ एति अनर्थ गार्हभापतिः ज व केहि वो ल्ये न नः फेरि वो
 ला उ न ला ग्याः ज से वो ल न नः उं उ ले हा त ले दु गाले हा न ला ग्याः वो र हो लाः वो रे
 हो भ देः त सा उ न ला ग्या ॥ ३६ ॥ क से ले न डोरि ले वां रु ला ग्या सा र मा र भ नि को हि भ
 न ला ग्याः को हिः ए ति उंः ख दि दां मा प तिः व डो धे ये ग दो र हे छः भ न्न भ निः पु र णा
 मा र भ ई टं भ दे षा उ दो ठ ग हा भ न ला ग्या ॥ ३७ ॥ ये को ध न स कि य छ रः स ज न जे
 सह न सित भ ई सु पा व र हे छः भं न न रः स न पा उ ला र ध नि कुं ला भ नि प र्व त जे
 व डो धे ये ग न ला गिर हे छ भं ध न ॥ ३८ ॥ व कु ला र्ज णा न प नि ग दो मो नि भ ई र हे छः
 भ नि सु वे धे ग ईः अ प मा न वा पु ग दे ठ टा ग न ला ग्या ॥ ३९ ॥ जो सो का ठ का पु ट लि ला
 ई ज्या न न ला ग्यो सो ग र्ध पु त लि के हि भं दे न नः त से ग रि वां लि थ न स मा प नि आ पे

मेरो कर्मभोग हो भानिः कनिषानि रिदा भयन् ॥४०॥ तों हा उपां स. अर्थ मसुषे
रुसलेः ५ः खदि या का पतिः सात्तिक धैर्य ले दठ भई आ प्रे विवेक ले आ फे मा
परम भाग वत को सो भाव लिई. विवेक विज्ञान गाथा कन गा उं दा भया ॥४१॥ म
लोई सुख ५ः खदि न्या मा कारण ई मनुषे जन पति होई न न. देवता पति होई न
न. ग्रह पति होई न न. कर्म काल पति होई न न. मने मात्र हो. जस मन का तरं
गः काम क्रोधादिलेः ससार रूपि वक्र कुमा उं छ. तसर्थ सुख भनि लोभ्या उ न्या
सवे दुख दिना मने मात्र हो ॥४२॥ यदि मने खे गुण को सृष्टि गर्ध. निकी ननि
को मिमित र ले तर ह का गुण माणिः सात्तिक राज सता म सक मः नाना तर
ह काः किया मा भु लाई जन्म वथाः वरा पग रा उं न्या मनुषे देवताः पशु पंछि ई

त्यादिचौरासिमाद्युमाउत्यारुहिमनहो॥४३॥ योसवेजुटोफस्यादमनैलेजिव
 केनलायाकोछः जस्करराताहः ईश्वरमायोमनयेनरः योसंसारपनिदेनः यो
 मनभयाकाजिवलाइमात्रछआफुभगवान्अंतर्गमिरुपलेजाहिसेरेद्य
 मलासादिरुपभैवस्याकाछन्- मायामनरहितरुप्यालेरुत्तदेहमाभयाका
 सुखडवेदेविपरैः क्रियाकर्मदेविपरैः केवलज्ञानस्वरुपजिवकासकलकर्म
 केनदेष्टानिः निर्लेपभईः जाहिछन्ः तपनिरुहिमनकाअनेककर्मभम
 नालेः विषयमायाजालमाहितजसोमानिकामादिभोगः गर्दजिवभगवा
 न्कन- भूलिसंसारमावांधियाकोछ॥४४॥ दानगर्तः स्नानसंध्याउजातर्पन
 गर्त- अयेनसंक्रान्तिइत्यादियवमाधर्मकर्मगर्तप्राणिमादयासांतिविमाप्र

२१म०
 २३

भक्तिमो न अहिंसा ममता संतोष आद्यसकलः सात्विकक्रियाः हरिकथा श्रव
नादि- रेकादसि जन्म मृति ममता वसिः सिवरात्रिपुभक्ति श्रनेकवृत्तः इष
वासादिगर्भ- इत्यादिसर्वैकोतिथिः मनैलाईसं पूर्णसंसारपंचव
स्रलोकारिका मयविषे भोगदेवि ईहलोक परलोक को लुप्ता देवि प
नि मिथ्या जु पोरहे च भानिः वैराग्य पूर्वकः मन धे वि आ प्रा व स मा पा
दि- रस मन कातरंगः काम क्रोधादि देवि रहित भैसां त उ ना नि मि त्त
हो- उ त म योग समाधि भन्या को मनैलाई विचिः सकल काम श्रुत्ये भ
दृढ स्थिर रुहो ॥४५॥ जस्को मन सांत छ- उ लाई ति अचि भन्या को ।

दानादिसकलकर्मवशात्कर्तव्यावाहियोजस्कोमनसांतभयेनभन्या
निदानादिसकलकर्मोपरागरेरयोः काभयाः निदानादिकर्मकोफल
मतेसांतहुनालाइहोः अर्कोकामकेहिदेन. मनसांतभयेनभन्याः नि
दानादिसकलकर्मगरिडुः खमात्रतथापातुंछन्. सेस्तुकराकोआ
सयेः येहोभनि. कोहिजां देन **॥४६॥** मनसांतनभयापनिअरुइंदि
यजितउफलहो॥ दानादिसकलक्रियाकोभनिकोहिभंतन. होइ
नः किनभन्याः संप्रसाइंदियेमनकावसमाद्यन्. मनकसेइंदिये
कावसमाद्येनन्. कसोद्यभन्या. अतिवैर्यगर्वायोगिरुस्तलाइयनिव

त का ल सं म ग न्या को न प दे विः ध वृ ग रा उं न्याः दर्जन वलियोः ग वार
यो गि तु नि ला ई भ ये क ह ग रा उं न्या र ह म मे हा त स थः रे स्म स न ला ई
ज से पे चे र स क ल इं डिये जि त न्याः ते हि होः स मे ला ई जि ति पर म धा म
अ ग म को ग पा ई दे व दे वः स स्व रूप आ के रुं छ ॥ ४७ ॥ ए सो दर्जन नु डः
स्व ले ष ति जि ति न लू क नुः का म को धा दि रा ग त ह्मा रु पि षे ग व ल लेः
अ ति व लियो भ मा को म न रु पि स त्रु ला ईः स त्रु ले भ नि न विं हिः स म स
म मा वा धा ग रिः घ ट ई मा लु का को यो म न स त्रु क न न जि तिः अ रु वा हि
र का ज नः भ ग वा नु काः आ त्मा क नः स त्रु मि त्रु उं द सि न्भ निः रे से म
न का घ र पिं उ का भि मा न ले उ ड ज न ह रु ष व रे न पा ई आ के ना स अ धा

यो नि मा ज्ञा न्या यथा वै र मा व ग रि ज न्तु व श य ग र्ध न ॥ ४८ ॥ यो मन ले क
 ल्पा का दे ह क नः पु त्र क ला त्रा दि का दे ह क न मे री हो भ नि ॥ अंध म या
 का म नुष्य ह र सो अ का को भ न्या र स भ म ले अ पा र ॥ सं सार रू पि स
 सार रू पि अंध का र मा मु ण म नुष्य ह र मु म द न ॥ ४९ ॥ स वे डुः स्व को
 का र ण म नै होः भ नि नि श्च ये ठ ह रा इः अ व क से ले डुः स्वा दि दि ना मा
 का र ण सं सारि ज नू क न भ न्द न ॥ क से ले इ टि दि दे व ता क न भ न्द न
 क से ले आ के आ मा हा भं द न ॥ क से ले ग्र ह क न भं द न ॥ क से ले क र्म
 हो भं द न ॥ क से ले का ल हो भं द न ॥ सो स व अ वि वे क लेः न ज्ञा नि भ न्या
 को होः भ नि से स पा ठ ले ई च व य डुः स्वा दि ना मा का र ण हो इ न नः भ नि

रास०
 २५

एकि धूर्वक कहै धन. संसारि जनतुः स्वदिना माकार एत न भ
न्याः आत्मा लाई छुखतुः स्वधै ननः देह लाई पोअ स्वतुः स्वकुं धन. आ
त्मा देह होई नः संसारि जनतुः स्वदिया देह लाई होः यो देह पति
पंचभुत लेव न्याकाः ईनै संसारि जनतु जसो पंचभुत लेव न्याको
हो. संसारु कोर. से स देह को केर. से के जात स्व रूप हो आये हो
आकु लाई व्यापै लेः तुः स्वदिया मा आकु क समा यिरि सिनु जसो आ
प्रादात ले आकु जिभो टो व्यामा क स देव रि सिनुः तसर्थः यो दे
ह मा तुः स्वदिनार यो देह से के होः कसाई रिस गत. म आत्मा तु
देह होई नः आकालाई तुः स्वभया मा आकु लाई व्यावाधाः तुः स्व

देह लाई धृ. भ-आत्मा लाई धृ. तदुःख दिव्या भार दुःख पार्तु न्या माः आ
 मास के होर ते सपाठ ले पतिः को पग न को विषये धृ. न॥ ४०॥ ५ः स्व
 दिना मा कारण इन्द्रिये का अधिष्ठाता देवता हुन भ-न्या त त त अंग
 का अधिष्ठाताः देवता सर्वेः संसारि जन का इन्द्रिये ले प्रकृत भया का
 अंग मार त्या काः देवता लाई धृ. ति देवता रि सग रु न भ-न्याः सव का दे
 ह इन्द्रिया धिष्ठाता देवता य निः देह मात्र भि न्नु धृ. न ति देह मार त्या
 का देवता. उ नै हु न्. देह मात्र भि न्नु धृ. त स थ देह मार त्या का देव
 ता स के हु न् रः क स मा थि रे सग रु न् ज सो हा त को अधिष्ठाताः
 इन्द्र स्व को अधिष्ठाताः अति धृ. आ क्रा हा त लाई आ फ्रे स र व ले

राम०
 २६

ये क्वा मा. कस्मा धिरिति. आत्मा त अंग हो नः सर्वे अंग मा. रुके
हो र. रिस पति दे न ॥ ५१ ॥ अश्वतः स्वको कारण आत्मा हो भन्याः आ का
ले क्वा ग म्पो रः आ दे वि रिति. आत्मा को सो भा व रह्य. आ का स्व
भाव दे वि. आ ऊ को हि रिति दे नः अश्वतः स्व ऊ न्या स्व भा व न आत्मा
को हो ई नः आ का स्व उ प जा ई दि द्द शः आत्मा ला ई अश्वतः स्व ऊ न्
नि स स पा ठ लेः रिस ग ल भन्याः पर मात्मा दे वि दो ओ प दा र्थे दे नः
क से ले दो ओ प दा र्थ ज ग त् द दे वि द्द भ नि भन्या भन्याः सो अश्वतः
ज से हो रि ला ई स प भ नि धां ति ले उ रा उ न्या ला ई वि वे कि र हे न द्दः भ
नि को हि भं दे न नः ग वं र का फ रे भ निः हो रि हो भ निः सम जा ई दि द्द

ते सा ले भन्या कोः सा पै हो भतिः सहि रा ष्ट न न् त सैः यो ज ग त मा या रु य मि था
 होः सा वो हो ई न आत्मा ला ई छ ख डुः ख पै न् क्का सं क छ य यो रः रि सि तुः रि
 सि तु तः अ म मा त्र हो ॥ ५२ ॥ छ ख डुः ख को का र रा ग्र ह न भ न्याः आत्मा ला
 ई क्का वा धा र रि सि तुः कि न भ न्याः ग्र ह त ज न्म न्या ला ई यो ला ग्दः आत्मा
 त न क हि ले ज न्मो थोः त ज न्म न्या छ न ज न्मी र हे छुः न म न्या छ न आ ज
 अ म रः अ वि ना सिः र सा आत्मा ला ईः ग्र हा दि को सं व धे छे न ग्र ह त ज न्म
 न्या दे ह ला ई यो ला ग्द न् क सा रि ति ते ले ला ग्द न् भ न्या रा सि व क्र माः छ
 म न्या ग्र ह द्वा द स अ छ म रा सि माः र हा का ग्र हः ग्र हे ले य र स प र वि डाः ग्र
 हे ले पा उ भे द ले उ स ग्र ह ले उ स ग्र ह ला ई उ स ग्र ह ला उ स ग्र ह ले वि डा ग

न. रसरितिले ग्रह को रण दि स्थान माहु न्या पिडा ग्रह ग्रह लाई मा नहुं छ-
र सा ग्रह ले: सु क भ या का ल ग न मा ज न्ना उ त्प न्न हु न्या: देह मा ग्रह ले हु
न्या सु ख दु: ख ला ग्या छ न् ते हि देह मा ज स्तु अ भि मा न ग र्थ ते स ला ई ति
गु ज न्मा सु ख दु: ख हुं छ न् ते स देह मा अ भि मा न ग र्था: अ हं का र ला ई: सु
ख दु: ख छ न् त स र्थ: जो आत्मा छ स त: ति ग्रह दे वि देह दे वि अ हं का र दे
वि: अ के भि नै व र्थ: आत्मा आ फु ला ई का भ या को छ र रि सि त्तु: सु स्ता न
दै त्म रू प छ न् ॥ ५३ ॥ सु ख दु: ख को का रण: क र्म लो भ न्या: आत्मा ला ई का वा
धा ज का रण ले: आत्मा मा: क र्म को सं वं धै छ न् क र्म आत्मा ले ई न: स स रू
प आत्मा छ हु यो क र्म छ क सो ग रि भ न्या: सो क र्म ज उ प नि वे तं न्य प नि रु के

वस्तुस्वरूपभयातः उभयजडवैतन्यात्मकः एकैवस्तुस्वरूपदेविजडुनाले
 दुखभास्यन्यावैतन्यकुनालेदुःखदार्तः महितगुरुभंन्याश्रुसंधानकुंदो
 होरः तवमेसविजडात्मकः ऐकैवस्तुस्वरूपतदैतः किनभन्याः देहजुहो
 रः मलाईदुःखनहवसः हितैहवसः भानिजडदेहलाईईच्छाकसोरिह
 वसः आत्मा लाईत सुखदुःखरहितनिर्विकारज्ञान सुखानंदईच्छारहि
 तसवैतन्या रूपधर आत्मा लाईयोदुःखनहवसः हितैहवसभंन्या ईच्छा
 कसोरिहवसः ऐतोहनाले सुखदुःखस्वरूपकोतुलभयाका कनैद्यैतनः कसदे
 विकोरिसिवसः वग्वादमात्रहो ॥५४॥ सुखदुःखकारुणकालहोभयापनि
 आत्मा लाईवाधाकुदेतकिभन्याः काल आत्मा को अंशस्वरूपहोरकालस्वरूपे आत्मा

रा रण मा प न्या ॥ ५७ ॥ र स प कार लेः इ य न छुं द माः मे से भ कि ६६ रु न्याः पर म वै रा
प पा सो र शे इ या नि छ भ या को अ लि क गा हो न मा निः अ त्वं त हि त मा स न्या स थ म प
र म हं स्य उ र्ग लि ई छ वि वि वे क र्ग मा र्ज न ह र लेः अ ने क त र ह ले डु ख ति र स्का र
ग न्या मा प निः आ प्रै स्वा ति क थ म मार हि नि अ ल भ ई पर मो न स उ र्ग गा था क न
गा उं द भ याः स ता रि ति को वे र्य ह र्व कः मे रा च र ण र विं द वि वे प्रे म भ कि ले मे रा ह
गु र मा आ ई पर म भा ग व त का धा म मा वि रा ज मा न रु द भ या ॥ ५८ ॥ हे उं द व जि
सु ख डुः खा दि दि न्या ना ना त र ह को ता प व ढा उ न्याः वृ था ईं डि ग्रेः जु टा सु ख रु पि ई मा
हिं डुः ख क न दि न्या अ को को हि दे नः यो सं व अ थ सो र स तु मि त्र उं द सि न् भ नि
का म को ध ग र्द भ या काः सं सार मा गु मा उ न्याः अ ज्ञा न व ढा उ न्याः ई मा दि उ प द्र व

दिव्याः ऐश्वर्यं मनी लेहो ॥ ५२ ॥ अस्यार्थः हे उद्धव जिमे रात्र रण विवे- द्यम कि पूर्वकः ता
 नेदिये कर्मे इंदिये वै चिन्ता तिक विज्ञान ली उक्त मया काः उक्ति ले मला इवे चिनिः
 काम भईः आत्मा तु संधान गरिर रुतः एहि सकल योग कोः योग राज होः भनि विम्व
 संमान गर दृष्टा स्वस्वरूप होला ॥ ५३ ॥ ऐसा रित को उत्र मभिं भूगिताः अथा पूर्वक
 जोय दला जो सुला जो धारण गला स्वपनि वास देवजिका गति मा उगत पा उं ला ॥
 ॥ ५४ ॥ ॥ इति श्री भगवान् उद्धव संवादे अष्टादशोऽध्याये ॥ ॥ ५५ ॥ रा सुक देव
 जिलेः आकु भक्त शीरा जा परिष्ठा तु कनः संदूर्य श्री भगवत सुता ई- सवे वा भाग
 वत को सारः परमार्थः तत्त्व निर्मयि गरिः सह जे संसार सा गर दोषि पार रु व स भं
 मं नानि मित्र वर्तन प्रवर्क श्री हरि नाम किर्तन गनु भनिः आत्मा ग र्द्धन- हे परिष्ठातः

परमाणुदेविलिकनः दिवराजसंमः सेसजगत्तविवे॥ उत्तिज्जमयाकोद्यभ
निःकालकोनिलयेपनिः तिमिलाईकरंघुः श्रवकल्पपलयेपुगपरिसारा
मुन १ दिव्य १००० हजारापुगवित्सायदिः वलाको॥१॥ एकदिनकुंछः तेसे
लाईकल्पभंछनः तेसेआत्माका॥१॥ एकदिनमा॥४॥ वोधमनुवित्रद्वर॥३॥ ता
हं देविप्रलयैकुंछतेहिप्रलयः वलाकोरात्रिकहिंछः जोनवलारात्रिमाः स
मः सत्यमापातालाईतिनलोकप्रलयकुंछः ३ सेसप्रलयैकोनाउनिमिनि
कहिंछः जोनः सप्रलयमाः श्रीनारायणः सेसप्रयानमासयेनगईन॥४॥
सत्तेतरहलेः प्रलयैकुंछेः फेरि॥१४॥ मनुः विन्नेः अधिकलाकारितिलेः प्र
लयकुंछेः भयाकासमयकोहिनः सत्तेदिनकोमहिनाः सत्तेमहिनाकोव

वगारि ॥ ५० ॥ वर्षको प्रथम पशुः उत्तम पशुः ॥ ५० ॥ आर्का वर्षको दोशो पशुः
 रसरितिको द्विपशुः वस्त्राको आशु कर्हिंघः रसप्रलये को नाउं पशुति प्र
 लकहिंघः रसप्रलयमावतुं दस भवनात्मा कसं प्ररुं प्रसां रौं नष्ट संसर
 ऊँ ॥ ६ ॥ कस्तारितिले संलं रनष्ट ऊँ धन्या धे ॥ १०० ॥ सये वर्ष संमा अना
 वृष्टि ऊँ धः सोपानि नवसं नः अना वृष्टि नालेः अन्नपति ऊँ देन अन्न नऊ
 नालेः सं प्ररुं प्राणि सुधालेः वा प्रभया काः अपत्याः उत्सले उत्सला ई उत्सले
 उत्सला ई धान्या धन ॥ १० ॥ रसरितिलेः सं प्ररुं प्रातिजन रु रनष्ट न्या धनः ता
 सं उत्तमः समुं डको वृष्टि वि को सरिर को सरः सं प्ररुं सावर्त कना माः सयेले
 सो वगारि धानि वस न्या धे नरा ॥ १० ॥ रस्तारितिले सं प्ररुं रसः सुका को वस्त्रा उ

कनः पातालमारुह्य काः सेवका फनि देवि नित्ता का अग्निले उहन गगनाः
धनः संपूर्ण लोक नष्ट कुन्या धन ॥ १८ ॥ यावत्सोऽजसो गोवरको गुजिं ठो पे
लिया को वसति रुंधः तस्यै रुंध ॥ १९ ॥ ता हा उपातः म हा वायु समेतः हा
का सुउज गोपानिका धारा वसो उ न्या धनः संपूर्ण जलामयै रुंध ॥ २० ॥
त ॥ १९ ॥ स १०० वर्ष संमः वायु लाम्या पदिव डो स दग दे विजु लिच म क
दे १०० वर्ष संमः मिथ व सं दामा जलामय मया पदिवः बोध भुवन म
चा ता उर रु दे न ॥ २१ ॥ ता हा पदिव धि वि को गंध उरु जल ले ह द द
रः गंध रु रा या कि प धि जमाल य रुंध ॥ २२ ॥ ता हा उपातः जल को र
स ते जमा विला रुंध २० जल प नि ते जे माल य रुंध ता हा उपात ते

जको रूप वायुमा विलाउंछ ॥ १४ ॥ तेजपनि वायुमा लायुंछ ॥ ताहा
उंछांतः वायुको स्वर्णगुण ॥ अकासमा विलाउंछ ॥ रवायुपनि अका
समा लायुंछ ॥ १५ ॥ तां हां उंछांतः अकासको सद्युग ॥ तामस
अहंकारमा विलाउंछ ॥ अकासपनिः तेहि तामस अहंकार
मा लायुंछ ॥ १६ ॥ ताहा उंछांतः संदूरग इंदियेः विषय लसहित
भयाकोः अहंकारः मरुतत्त्वमा लायुंछ ॥ तामरुतत्त्वतिन्रु
णमा लायुंछ ॥ तिन्रुतिन्रुः गुणः अथाकत भुलपु कतिउधा
नमालिन्रुंछन ॥ १७ ॥ सारितिले सवपु पंचको प्रलये भईः
केवलस्थितिकि कारण भया किमाया मात्र रहंछः स्वमायापनिः ॥

स्वरूपमा अंतर्धानमईहरीर्द्धः जस्वरूपमा सवलमभयाः उपर
वसुकोः कोहिकालेपनिकसेलेपानिः कहिलेना सप्रलमकुंदैनः उ
परवसुस्वरूपवसुकसोद्धमन्याकालको अभयः अंगहोशनादिक
लेनासनहुन्याः आदिअनसनभयाकोः अयत्तनित्यकारणः अय
येअविनासिध॥१८॥ जाहामनवचनः सकलईद्रियः पांणः बुद्धिदे
वताः सत्वरजतमः इतिनगुणको संस्करणः उपवात्तकः वल्लोउले
लो कः कल्पनाको रचनाः विशेषकोहियनिषनिषुआधैन॥१९॥
नउंहांस्वप्नाः नजायतः नसुषुप्तिः नशुकादाः नवायुः नतेजनज
लनष्टिः नसूर्यः नअग्निः नचंद्रमाः कोहियनिविचारिनसकृत्

हो भ निस त्र मा न्न स कै ल य पंच सं न्य हु न्या लेः सं न्य ज र ताः सं न्य प नि हो
 ई न यो स श्र धा म भ तिः जा न्या ह र नि वि क ल स मा धि ले स न्मा न छ
 न् ॥ २० ॥ से सा य र व ल सा माः सं पू र्ण य पंच स मे त का ल ले मा या कि प छ
 ति को ल य हु नुः पा क त उ ल य क हि न्दु ॥ २१ ॥ अ व अ त्पं नि क प ल य
 क हि न्दुः दे ह इं दि यः पा र म न वू डिः इ त्या दि ज ग दि सा र पंच सं पू र्ण
 यो अ व लु मि थ्या होः आ दि ज न्न प नि हु न्या ना सि न्या प नि हु ना ले से सो
 जो छ- सो म भै रु टो हो भ ति भ न्या को हो दे वि या को भ ति या कोः सु ति या
 को यो व लु माः सा वो ड हि प र व ल सा न्न जा न्ता ॥ २२ ॥ ज सो दि यः च क्ष रू प
 इ दे वि या काः ति न जै दे विं छः सां लो व ल सा न्नः प रि पू र्ण यो स भ व रा च

२: सभ तत्त्व रूप हो: भनि विस्वा स मानु ॥२३॥ जगत्तर वृक्ष को अभेद हो: स
के हो भन्या: जगत्तर ना सिद्धा मा. वृक्ष को ना सहो ला: भनिको हि भं न न जगत्
को ना सहो द मा: वृक्ष को ना सहो द न: क सारि भन्या: यो पु पंच जगत्तर मा मा
ले: वन्या को हो र. ता सिद्ध न. धम ले हो रि मा: स र्ध वन्दर धम न व भया प
दि अ मै ले. वन्या को हो रि स र्ध र रा उ द्य. हो रि र रा उ द्य न: जलो: धम मा या ले
वन्या को जगत्तर मा न ना सिद्ध: वृक्ष अ वि ना सिद्ध जा गत्तर: स्व प्रा: सु सु मि र
अ वस्था प नि: उ डि का मा न ऊ न. इ नै ति न् अ वस्था का अ धि यो ना वि श्वा
तै: ज स प्रा ता भ नु प नि हे रा ज न: परि क्षित: स व मा या मा त्रै हो: स न्नु व सै मा
त्रै जा नु ॥२४॥ क सारि ति ले अ नित्य धम न्या उ न्ति ज न्म जौ न व लु को ऊ द्य

लोअवस्पृष्टकुंभः जलो जन्मा को प्राणिमर्चः नष्टकुंभः जलो यो जगत्तत्त्व
 त्रिमया को हो रना सिन्धुः जलो अकासमा मेघमंडलः उत्पत्तिकुंभः मानातर
 रको देखिन्दुः कोहिकालसंभूरुंभः फेरिनष्टहोईजान्दुः अकासनित्येरेक
 रूपअविनासिद्यः मेघनष्टकुंभमाः नष्टकुंभैः तस्यै प्रसदेविजगत्तमेनष्ट
 कुंभः प्रसरेकरूपअविनासिजांनु॥२५॥ जलो धागाले वना को कपडाननां
 अधुतः पुरातका टन्याकुंभः धागोत कपडाननां भंदापनिः अधुतपुराका
 टा भंदापनिः धागो भंन्याना उहरा उंभैः कपरा को अकारमेटियापनिधा
 गा को अकारमेटिईदेन प्रसमाः यो जगत्तको सृष्टिस्थितप्रलयकुंभः प्रस
 तः तिनैकालमापनिरै करूपद्यः संहरुदमाः जगत्तको अकारमात्रैहरा

उं हः वलना उं तत्त अविना सिधः धागा विना कपडा देखि न्या छैनः धागो तः
कपरा न वदे पानि धागा को अकार मेदि नैन तसे वल विना जगत् देखि नैनः
जगत् विना पनि वल छंदे छ॥ २६॥ ऐसूरिले विचार गहमाः कार्य जगत्तः
कारण वल जगमाः वल व्यापकः भंन्या करः सब जगत्तकोः आधार वल
भंनु पनि सिद्धांत होई नः सिध को मतिलाइः विउं जान्या उपाई मान होः
यो सभ मिथ्या होः तत्त रूप नारायेण मानः देह अद्य इंद्रिये मन बुद्धि का
गमै छैनरः जान्या हरू नूतिं सात्रै भईः प्रपंचातिः जान्दछ॥ २७॥ ऐसूपका
रले सब देखि साका प्रपंच कुटो हो भनिः अनेक दृष्टांत कहिक नः देखिं
नरः यो जगत् पनि सां ले क्हा हान हो सः भनिकोहि भन्नन् भनिकेरि कहं

न. कलो भयाः योजगत्. देखिं छ तपनि आत्मा का रात्रे ले मात्रै देखि या को छ
 जलो डोरि मा सव देखि यो को कुठे पतिः डोरि को सत्रे ले मात्र होः डोरि न भ
 या कुठे सायः डोरि मा न भया को देखि न्या थिये न डोरि भं न्या विवे कन कुना ले
 पो साय देखि या को छ. विवे क मा या पछि. सव अवश्य रुकुं छ. सां वो डोरि मा
 न देखिं छ. तसै वल्ल भया विवे क न कुं जाल मात्रै जगत् देखिं छ. वल्ल जाल भा
 या पछि. अत्र मात्रै पति देखिं न्या देनः वल्ल विना देखि न्या जगत् देखिं न. वल्ल तज
 त विना पति छं देखि रः सत्य रूप वल्ल मात्रै होः जगत् मिथ्या हो भनि ॥२८॥ को हि
 भमस. तपनि सत्य पति वल्ल माः जिव वल्ल माया भया रलो नाना तर हव भ
 नि भमस तपतिः मा न जानि भया को होः सत्य वल्ल मा नाना देखि न. जसो रके अ

अकारसंघटनमित्रघटनमित्रजलपात्रमित्रः वेसावल्लभात्रः श्रुतेकुरुन्ः अ
कारसंघटनमित्रः तलाउधेदेष्टप्रतिविधिवपनिधेदेदेरिंदुन्ः सुखेतरके
ऊन्ः घटघटदेहमात्रैः अनेकघटः तिघटदेहमित्रवायुतरकेकेहोः तसीयो
प्रजाजु॥२॥ तसीरुकेसुवर्णकीः वालाकुरालकंकणगरुनाईत्यादिअने
कनाउंऊंघटपनिविवाद्यगर्माः तिनाउंमात्रैः अनेकघटः सुवर्णतरके
होः तसीपंचमहासुतात्माकः वीधधुवनभन्नाईत्यादिनाउंजतिवर्णस्व
रुपाः अनेकसेकेवलभगवान्नासयेणमाकल्पनागरिमाकोछः कश्चे
भन्नाअहंकारविधिधामतिभयाकोदेहाभिमानिलेमित्रकलाकोहोः वि
वेकिउरुखः रुकेनारायणमात्रैः सत्यजादुखन्॥३॥ अहंकारलेभुक्तभया

काले-अनेकभन्धन-भन्दा मा-भगवान् लाई-अहंकारले कसो गरि ठाको
 भन्दा वस भगवान् लाई ठाको भन्दा-अहंकारले यो कसो गरि देखि हेला
 भन्दा-जसो सूर्यको किरण देखि उतं नभयाका-मेघले-सूर्यका अ
 पनेत्रकनठककृतसो वस देखि उतं नभयाको-अहंकारले पनि
 वस लाई ठाकते नवसको असजित लाई ठाक छ र त्यो अहंकार
 नष्ट नभै जिवले लेन पाग देन ॥ २१ ॥ तसो मेघले-आषालाई ठाकि
 सूर्यलाई देख्न नदिने-वा अले वा दल फाया पछि नेत्रेले सूर्यला
 ई देख्न छन-जसो यो अहंकार ठाकियाको जिवपनिपनि विवेक
 रुपि वा अले-अहंकार रुपि वा दल फाया पछि-अहंकार रहित

राम०
 ३६

भै. चैकुस्वस्वरुदेवतपां ठं दन् ॥ ३३ ॥ ज्ञानरूपिसास्त्रलेमाया मयश्च
काररूपिवंधनकादिः जहिलसवदेविः विरुक्तं उदासिन् कृंदः ते सैवे
ला माः केवलस्वस्वरुपनाशयेरापरबुलको अतभवया ईश्वरनंदरु
पः पायाको योगिमाया पारजा न्यन्. सेसरितिलेमायाको प्रलय
भयाको जो द्योत्या त्वंति क प्रलय कहिं न्य ॥ ३३ ॥ अवनित्य प्रलय
कहिं च. प्रलादिस कलजंतु प्राणि वरा वरको देदिनै विषे प्रलय क
दैद्य भानि सुश्रम सति भयाका जा न्या ले करु दन्. दिनदिनै प्रलय
येऊ न्या भया उहिमानि सस्वै क सो गरि दैद्य भानि को हि भंनन् ॥
३४ केन भन्याः उहिनदिहो भं दन्ः पहिला दिन का जल न वगितो

थो उहित दिहो भम्पा त पति विचार ग न्या. जल त अर्के हो भ धन
 जलै अकाश मा ता रा हि आ को देखि हि दैन त पति. उदाया का अ
 ला सा को विचार ग न्या ले ता रा हि उदार सा धन. भनि निश्चये ग
 र्धन. तलै संपूर्ण का वाल यो वन वृद्धा अवस्था देखना ले दिन दि
 मे. ता सि न्या रहै करयो अवस्था फेरि न्दुन भनि जां न्या ले कहं धन
 ॥३५॥ आदि अंत्य ग न्या काल ले कि ग या को गति अकाश मा ता रा
 को गति न देखि या जे मा न हो. अवस्था काल को गति न बुझि उहि
 प्राणि हो भं न्या को हो दिन दिने पल य कुंदा उरु ॥३६॥ ऐ हि रिति
 ले नि स ने मिनि क पाठन अंत्य तिक ई चार तर ह को पल ये कहियो

यो सं पूर्ण काल को गति से तो रहे छ भ नि जा दा सं पूर्ण देखि विरक्त उदासिन्- आत्मा
नु सं ध्या न माः आनंद रहनु ॥ ३७ ॥ हे परिशीत रासा तर हलेः गाई मा कोः इ सं पूर्ण आ
नंत सकिले उक्त भया काना राये रा कालिदाः मेरा बुद्धि ले भेदा सा सं म क साः अ
व सं पूर्ण कह रुना क न व ला विष्णु महा देव जिसे ख नां ग पुनि सक न्या दे न ॥ ३८ ॥
सं पूर्ण कहि सकि न्या रहे न छ भ न्या कि न सं न त वः न भं ठ क्का हा भ न्याः अ नंत म
हि मा भ या काना रा ये रा रु ना ले- ई का म हि मा लिला कह न सकि दे न त प निः भ ग
वा न् कालि ला का क था म हि मा अ न्दे मा अ ज्ञा न त छ रुं छ रः पर न भा ग व न
को ग ति मि ल्दः त स र्थ ज स्ते सं सार सा गर देखि पार रुं भ न्या ई कार व्यो
भ न्या वि ना प्र भ ना रा ये रा वा अ दे व कालि ला क था न छ ति कि न न न गरि
को हि प नि पार जा न्या दे नः त स र्थ भ ग वा का वि हा रः वृ न्दा व ना दि लिला क

कथा अनुक्तिर्नगर्तपरमपदवाञ्छिः यो भवरोडुः खड्गुद्युताः वा
 अदेवकालिला कथा मात्रे दन ॥ ३२ ॥ यो प्रशरणी भागवतः पेशे वदरिका
 अममाः नारायेण का सुखारविन्ददेवि नारदजितेष्टन्या को होः नारदजितेः
 मेरा पिता व्यासदेव जिला इकल्या को हो ॥ ४० ॥ सो इस्मी भागवतः मेरा पिता व्या
 सदेव जिते सांत वा सुदेव विखेः भक्तिभया काः नदेवि प्रसन्न भयार मला
 र्पण या अनायाः वृजायाः स्वामी भागवत मैलेः भक्तिमिला इदिना आ
 नंद हयम् ॥ ४१ ॥ ऐहिति त्रैमेये संवाद भया को श्री भागवतः पदिने मिषा
 रण विखे छन ना मा पौराणिक ॥ ८८०० ॥ अठासि हजार सोन का दिनुः
 निरुक्त कनक हत्या छन ॥ ४२ ॥ इति श्री उपासना तन्त्रे ब्रह्मज्ञाने श्री कदेव

राम०
 ३८